बलसन क्षेत्र के देवी–देवताओं से सम्बन्धित लोक गीत

DR. MADAN LAL
Gust Faculty Lecturer, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

हिमाचल प्रदेश की लोक परम्परा और लोक संस्कृति का इतिहास इतना पुरातन है जितनी प्राचीन मानव सभ्यता। यहां की लोक सस्कृति, लोक गाथाएं, लोकगीत, त्यौहार, मेले अपना उच्च स्थान रखते है। प्राचीन काल से ही इस प्रदेश के मनोरंजन के साधन यही लोक गाथाएं, लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक नाट्य सजीव चित्रण इत्यादि ही माने जाते है। बलसन क्षेत्र भी शिमला ज़िला का एक सुन्दर क्षेत्र है। यह क्षेत्र पहाड़ियों, घाटियों तथा घने जंगलों से घिरा हुआ है। यह अपनी लोक परम्परा व लोक संस्कृति में अनूठा अस्तित्व रखता है। यहां लोग हर त्यौहार, मेलों, पर्वों, संस्कारों को भलीभान्ति निभाते हैं और देवी देवताओं के प्रति अपार निष्ठा व श्रद्धा रखते है। लोगों द्वारा यहां देवी देवताओं से सम्बन्धित लोक गीतों को विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है जो यहां की संस्कृति के परिचायक भी है। ये लोक गीत रामायण, महाभारत तथा अन्य स्थानीय देवी–देवताओं से सम्बन्धित होते है जिनको यहां के लोगों द्वारा भली प्रकार से गाया जाता है।

बीज शब्द

बलसन क्षेत्र, देवी–देवता, लोक गीत

भूमिका

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व उत्तर–पश्चिमी हिमाचल क्षेत्र में अनेक छोटी–बड़ी रियासतें थी। हिमाचल का लगभग आधा भाग अंग्रेजों के अधीन था तथा आधा भाग राजाओं एवं राणाओं के बीच छोटी–छोटी रियासतों में बंटा हुआ था। अपने–अपने राज्यों का प्रशासन चलाने के लिए वे स्वतन्त्र तो थे, लेकिन प्रभुसता प्रायः अंग्रेजों के हाथों में थी। इस प्रकार लगभग तीस छोटी–बड़ी रियासतें हुआ करती थी, जिसमें बलसन रियासत का विशेष महत्त्व था। बलसन राजाओं की रियासत थी। कहा जाता है कि इस रियासत की नींव ठाकुर बलाल सेन ने 11वीं शताब्दी में रखी थी। जिसके नाम पर इस रियासत का नाम बलसन पड़ा। कहा जाता है कि 11वीं शताब्दी के अन्त में शिमला के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों को 18 रजवाड़ों में बांट दिया गया। ये रजवाड़े क्षेत्रफल, जनसंख्या, आर्थिक स्थिति और राजसत्ता के लिहाज से बहुत छोटे थे। इसी कारण राणा या ठाकुर कहलाते थे। छोटे होने के कारण ये राज्य ठकुराई कहलाए जाने लगे। अतः शिमला के ऊपरी पहाड़ी इलाकों में 18 ठाकुर होने के कारण इन पहाड़ी इलाकों को 18 ठकुराईयों में बांट दिया। इन 18 ठकुराईयों में से बलसन क्षेत्र को ''बलसन ठकुराई'' के नाम से भी जाना जाता है।

बलसन के इतिहास और परम्परा के अनुसार इस ठाकुराई की नींव प्राचीन सिरमौर के राज परिवार के एक सूर्यवंशी राठौड़ अलक सिंह ने डाली। सिरमौर का यह पहला राठौड़ वंश बारहवीं शताब्दी के आखिरी दशक में गिरि नदी में बाढ़ आने के कारण नष्ट हो गया था। इस में इस वंश का अन्तिम राजा उग्र चन्द भी जलमग्न हो गया था। बलसन के राणा भी अपने आप को इसी परिवार

से मानते थे जिसका बारहवीं शताब्दी में अन्त हो गया। रण बहादुर सिंह की पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ बलसन स्टेट' में भी नटनी के गिरि नदी में गिरने, उसके पश्चात् विद्रोह होने और अलक सिंह के वहां से भागने का उल्लेख उपरोक्त बातों की पुष्टि करता है। स्पष्ट है कि बलसन ठाकुराई की स्थापना कहीं बारहवीं शताब्दी में किसी समय हुई होगी। बलसन कई वर्षों तक सिरमौर के अधीन रहा। गोरखों के आक्रमण से पूर्व यह कुम्हारसेन का करद राज्य था।

भौगोलिक स्थिति

बलसन क्षेत्र शिमला ज़िले की ठियोग तहसील के अन्तर्गत आता है। यह क्षेत्र अत्यन्त मनमोहक है। यहां के पहाड़ एवं गिरि नदी का प्रभाव इसके सौन्दर्य को और भी प्रभावित करता है। गिरि नदी के पूर्वी दिशा के किनारे बसा यह क्षेत्र विस्तृत एवं सार पूर्ण है। यह शिमला से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गिरि गंगा, काण्डा, बधेर, दांदी, माईपुल इत्यादि स्थान बलसन क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं, जो कि प्रसिद्ध पर्यटन स्थल माने जाते है।

बलसन क्षेत्र की सीमाएं उत्तर पूर्व में कोटखाई तहसील, पश्चिम में ठियोग तहसील और दक्षिण में चौपाल तहसील से मिलती है। यह क्षेत्र तीन तहसीलों को आपस में जोड़ता है। सिरमौर का प्रभाव भी कुछ कम नहीं, इसकी सीमाएं मुख्यतौर से सिरमौर से भी लगती है।

सामाजिक पृष्ठभूमि

बलसन क्षेत्र में सालभर में विभिन्न त्योहार मनाए जाते हैं जिसे यहां के लोग अपने पारम्परिक ढंग से मनाते हैं। मेलों में लोगों के मंनोरंजन का साधन ठोडा नृत्य होता है इसमें तीर–कमान से एक दूसरे की टांग पर प्रहार किया जाता है तथा मोटी–मोटी सलवारें पहनकर लोगों के द्वारा यह खेल खेला जाता है तथा रात को भोजन में मुख्यतः सिड्डू–घी, दाल–चावल इत्यादि परोसे जाते हैं। यहां के लोगों की दिनचर्या में खेती–बाड़ी, पशुपालन तथा एक दूसरों की मदद करना इत्यादि विशेष महत्त्व रखता है। समय परिवर्तन के साथ अब बहुत सी पारम्परिक चीजों का स्वरूप बदलता नज़र आ रहा है।

यहां के रीति–रिवाज़ आज भी इस क्षेत्र के जन जीवन को प्रभावित करते नज़र आते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों का आज भी पारम्परिक ढंग से निर्वाहन किया जाता है। इस क्षेत्र के लोगों की देवी–देवताओं के प्रति असीम आस्था व निष्ठा है। इस क्षेत्र में देवी–देवता को 'चार–मूल' के नाम से जाना जाता है। लोगों की असीम आस्था होने पर यहां के रीति–रिवाज़ों में अनेक प्रकार के देवी–देवताओं से सम्बन्धित लोक गीतों का साल भर में लोगों द्वारा विभिन्न अवसरों पर गया जाता है। इस परम्परा ने आजतक बलसन क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति को जिन्दा रखा है। बलसन क्षेत्र के देवी–देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत इस प्रकार हैः

पाऐ के लाग लाग गोआ रे डेंऊदा

धणो–धणो देऊ ला रे गटीया।
चारे–चारे पोरे देऊ दगदे ना बाणौ।
घोड़े–घोड़े देऊ ला रे बौंरू, बाई।
बाई–बाई पोरो देऊ लछमे रो दाणौ।
बाईया छोड़े ला रे कौरणा एवै।
एआ सांसौ रा पराणौ।

भावार्थ

'सतैरण' एक ऐसा लोक गीत है, जो बवारनी से पहले गाया जाता है। उपर्युक्त लोक गीत में कर्ण तथा उससे सम्बन्धित वीरता का वर्णन किया गया है। कर्ण का जब जन्म हुआ था तो उसकी माता कुन्ती ने उसे नदी में बहा दिया था। जो बहता हुआ एक मच्छवारे के जाल में फंस गया। मच्छवारे ने उसका पालन पोषण किया। उपर्युक्त लोक गीत में कहा जा रहा है कि जिस गांव में कर्ण का पालन पोषण हुआ वहां के लोग एक राक्षस के आतंक से बहुत दुःखी थे। उन्हें हर छः महीने बाद राक्षस के भेजन के लिए एक आदमी को भेजना पड़ता था। एक दिन उस मच्छवारे की बारी आई, जिसने कर्ण का पालन–पोषण किया था। कर्ण अभी छोटा था तो वह मच्छवारा राक्षस के भोजन के लिए स्वयं तैयार हो रहा था। लेकिन जब कर्ण को इस बात का पता चला तो कर्ण ने अपने पिता को जाने के लिए इन्कार कर दिया और स्वयं तैयार हो गया। पिता के लाख मना करने पर भी वह नहीं माना, और राक्षस के भोजन के लिए चल पड़ा। जिसका परिणाम यह हुआ कि कर्ण ने उस राक्षस को ही द्वंद युद्ध में हरा दिया।

उपर्युक्त लोक गीत में यह भी बताया गया है कि राक्षस ने कर्ण को अपनी जान के बदले पिता की गद्दी, अपनी बहन बाई लछमा, धनुष–बाण व घोड़ा तथा पहनने के लिए दैवी वस्त्र देने का वादा किया और अपनी जान बचाई। यह लोक गीत बिना ताल के गाया जाता है।

स्वरलिपि

रे	रे	रे	रे	सा	नि	सा	सा	रे	रे	सा	सा	नि	प
पा	ओ	पा	ओ	धा	रौ	ऐ	ओ	रे	न	ग	री	रो	ऽ
ग	ग	ग	ग	ग	ग	रे	रे	रे	रे	रे	सा	सा	नि
खो	ड़ि	या	खो	ड़ि	या	मे	रि	या	रे	ज़ि	ऊं	रा	ऽ
सा	नि	सा	सा	रे	रे	सा	सा	रे	रे	सा	सा	नि	प
कैं	ई	न	हीं	तू	पा	ऐ	रा	रे	आ	ऊं	दा	ऽ	ऽ

शेष गीत इसी स्वरलिपि में गाया जाएगा।

रामायण

पौड़ी घरौ दे अ रामौ रे दुरज़ी पौड़ी घरौ दे.....
पौड़ी ज़तीया छाड़े बाईया मुखै नाहिणे के पाणी बोलौ, जतीया.....
पाणी ऐबै आणी वारज़ा छाड़ौ नाहिणै के पाणी वे, ऐबै.....
पाणी सिया गोए देवते पाणी के जाए वे, सिया.....
जाए जांदे गोए बौंदे बाओं बाऊये जाए वे, जांदे.....
जाए बांऊ आगै बांऊये री मिरगौ सूनू, बांऊ.....
सूनू दासीये मौतीये ओड़ी अ पाशी, दासी ये.....
सूनू पाशी ओड़ी निऊटी डेओ मिरगौ गाशी, पाशी.....
गाशी रूंदी–रूंदी सिया देऊते घरौ के आए, रूंदी–रूंदी.....
गाशी जांऊ न जांगै मिरगौ तांओ खांदी नी खाणौ।

भावार्थ

उपर्युक्त लोक गीता को बलसन क्षेत्र की लोक भाषा में गाया गया है। जिसे 'बवारनी' कहते है। बवारनी में केवल भगवान का ही वर्णन होता है। उपर्युक्त लोक गीत में श्री राम और सीता का वर्णन है। कहते है कि जब सीता पानी लेने जा रही थी तो उसने स्वर्ण मृग को देखा। वह उस हिरण की सुन्दरता पर मुग्ध हो गई। घर आकर सीता ने प्रभु श्री राम को उस हीरण के बारे में बताया और उसने उसे मारने का आग्रह किया। प्रभू श्री राम ने उस हिरण को मारने की बहुत कोशिश की लेकिन वह असफल होते रहे। इस पर सीता ने कहा अगर आपने हिरण नहीं मारा तो वह खाना नहीं खाएगी। उपर्युक्त लोकगीत में रामायण की पंक्ति का वर्णन किया गया है।

स्वरलिपि (ताल पहाड़ी दादरा, द्रुतलय)

रे	–	रे	–	म	–	म	–	रे	सा		
		प	ऽ	ड़ी	ऽ	घ	ऽ	रौ	ऽ	दे	अ
सा	–	नि़	सा	रे	–	रे	–	सा	सा	नि़	–
रा	ऽ	मौ	रै	ऽ	ऽ	दु	ऽ	र	ज़ी	ऽ	ऽ

उपर्युक्त गीत सारंग अंग के राग पर आधारित है।

महाभारत (पडैण)

पांजै पूजा पाण्डोवे बै धूंधू रा रवाड़, पांजै.....
शाठे पुजी कौंरूये कढासणी री धार, शाठै.....
शाठे बोलौ कौंरूये पूज़ी न जाणी, शाठे.....
झूँठो कियो नेऊजौ निचठो गांगै रो पाणी, झूँठो.....

पांजै तिने पाण्डोवे बे बचनौ दी आणी, पांजै.....
शूचौ कियो नेऊज़ौ उचटो गांगै रो पाणी, शूचौ.....
साह देवै पंडतै तिने वचनौ दी आणी, साह देवै.....
मेरै बांको भिमिया तू दे न बढ़हे, मरै.....
ठौतरो शौ छैली रो केथय करै, ठौतरो.....
आठ–शाठ दुर्गा लैऐ ऊमौ दे करै, आठ.....
पांजै बोलौ पाण्डोवै निये सतीये पताये, पांजै.....
भेखै गोआ बालकौ रै बागौ दा जाए, भेखै.....
फूला गोई मालणौ फूलडू के आए, फूला.....

भावार्थ

उपर्युक्त लोक गीत 'बवारनी' के अन्तर्गत आता है। इस गीत में महाभारत के समय कौरवों और पांडवों का वर्णन किया गया है। युद्ध प्रारम्भ होने से पहले कौरवों और पांडवों ने देवी–देवताओं का आहवान् किया था, जिसका उल्लेख उपर्युक्त गीत में दिया गया है। इस लोक गीत में यह भी दिया गया है कि पांच पांडवों ने देवी–देवताओं की पूजा बड़े विधि–विधान से की तथा दूसरी तरफ कौरव पूजा के नियमों से अनजान थे। उन्होंने देवताओं की पूजा विधि–विधान के नियमों के विरुद्ध की। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें युद्ध में पराज्य का मुंह देखना पड़ा।

स्वरलिपि (ताल पहाड़ी दादरा, द्रुतलय)

म	म	–	म	म	–	रे	रे	–	सा	–	–
पां	जै	ऽ	पू	जा	ऽ	पां	ड	ऽ	वै	ऽ	ऽ
नि	नि	–	ध़	प़	–	प़	–	–	–	प़	–
धूं	धू	ऽ	रा	र	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ड़	ऽ

शेष पंक्तियां इसी धुन में गाई जाएगी।

उपसंहार

हिमाचल प्रदेश की लोक परम्परा और लोक संस्कृति का इतिहास इतना पुरातन है जितनी प्राचीन मानव सभ्यता। यहां की लोक सस्कृति, लोक गाथाएं, लोकगीत, त्यौहार, मेले अपना उच्च स्थान रखते है। प्राचीन काल से ही इस प्रदेश के मनोरंजन के साधन यही लोक गाथाएं, लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक नाट्य सजीव चित्रण इत्यादि ही माने जाते है। बलसन क्षेत्र भी शिमला ज़िला का एक सुन्दर क्षेत्र है। यह क्षेत्र पहाड़ियों, घाटियों तथा घने जंगलों से घिरा हुआ है। यह अपनी लोक परम्परा व लोक संस्कृति में अनूठा अस्तित्व रखता है। यहां लोग हर त्यौहार, मेलों, पर्वों, संस्कारों को भलीभान्ति निभाते हैं और देवी देवताओं के प्रति अपार निष्ठा व श्रद्धा रखते है।

लोगों द्वारा यहां देवी देवताओं से सम्बन्धित लोक गीतों को विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है जो यहां की संस्कृति के परिचायक भी है। ये लोक गीत रामायण, महाभारत तथा अन्य स्थानीय देवी–देवताओं से सम्बन्धित होते है जिनको यहां के लोगों द्वारा भली प्रकार से गाया जाता है।

सन्दर्भ

सिंह मियां गोवर्धन (1996) हिमाचल प्रदेश का इतिहास, रिलांईस पब्लिशिंग हाउस, हिमाचल प्रदेश।

साक्षात्कार सूची

डॉ. बालक राम, गांव धार डाकघर देओठी तहसील ठियोग ज़िला शिमला हिमाचल प्रदेश।
श्री प्रेम लाल झाल्टा, गांव व डाकघर जनाहन तहसील ठियोग ज़िला शिमला हिमाचल प्रदेश।

Pratibha Spandan